गजानन माधव मुक्तिबोध : सृजन और संदर्भ

2016-17

सम्पादक
डॉ. सतीश यादव

सह-सम्पादक
डॉ. अर्जुन कसबे

गजानन माधव मुक्तिबोध : सृजन और संदर्भ

2016-17

सम्पादक
डॉ. सतीश यादव

सह-सम्पादक
डॉ. अर्जुन कसबे

शौर्य पब्लिकेशन, लातुर

:अनुक्रम:

खण्ड - अ

ग. मा. मुक्तिबोध की कविता : सृजन के विविध आयाम

१	लक्ष्य मुक्तिबोध का	प्रा. रंगनाथ तिवारी अनुवाद -डॉ. नागनाथ	
२	मुक्तिबोध का पुनर्मूल्यांकन	डॉ. एम श्याम राव	
३	नई कविता का ईमानदार मसीहा : गजानन माधव मुक्तिबोध	डॉ. संजय गडपावले	
४	मुक्तिबोध की कविता में मार्क्सवाद की अनुगूंज	डॉ. रणजीत जाधव	
५	मुक्तिबोध की कविता में मध्यवर्ग	डॉ. एस.ए. घडघकर	
६	मुक्तिबोध के काव्य में मूल्य चेतना	डॉ. शहेनाज अहेमद शेख	३६
७	गजानन माधव मुक्तिबोध के काव्य में यथार्थ	डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार	४०
८	मुक्तिबोध की लंबी कविता : 'अंधेरे में' संदर्भ में	डॉ. सविता किर्ते	४४
९	मुक्तिबोध की कविता में अभिव्यक्त मानवीय चेतना	डॉ. प्रकाश सदाशिव सूर्यवंशी	४९
१०	कवि के रूप में मुक्तिबोध का व्यक्तित्व	डॉ. संगीता लोमटे. डॉ. शिवाजी वैद्य	५२
११	मुक्तिबोध के काव्य में आन्तरिक जगत की अभिव्यक्ति	डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे	५८
१२	मुक्तिबोध : हिंदी के संघर्षशील कवि	डॉ. मधुकर राऊत	६२
१३	सर्वहारा वर्ग के पक्षधर : कवि मुक्तिबोध	डॉ. अर्जुन कसबे	६५
१४	मुक्तिबोध की कविता का वैचारिक पक्ष	डॉ. एम. के. ख़ाज़ी	६९
१५	मुक्तिबोध की कविता में सामाजिक चेतना	डॉ. अविनाश कासांडे	७३
१६	मुक्तिबोध का काव्य और पूँजीवादी व्यवस्था का सत्य	डॉ. पुष्पलता अग्रवाल	७७
१७	जनवादी कवि मुक्तिबोध	प्रा. राम विश्वंभर राजेगोरे	८१
१८	मुक्तिबोध की कविता और दार्शनिक विचारधारा	डॉ. ज्ञानेश्वर गाडे	८४
१९	मुक्तिबोध के काव्य में मार्क्सवाद	प्रा. सुलभा शेंडगे	८८
२०	मुक्तिबोध की कविता में व्यक्त पूँजीवाद के विरोधी स्वर	डॉ. मुकुंद कवडे	९१
२१	गजानन माधव मुक्तिबोध : सृजन और संदर्भ	डॉ. व्ही. के. भालेराव	९३
२२	मुक्तिबोध और उनकी काव्य साधना	डॉ. एम. ए. येल्लुरे	९६
२३	मुक्तिबोध की कविता में व्यक्त मध्यवर्ग	प्रा. संग्राम गायकवाड प्रा. बालाजी कारामुंगीकर	१००
२४	मुक्तिबोध की कविता में मार्क्सवाद	प्रा. हणमंतराव खिंडेवाले	१०२
२५	नई कविता और मुक्तिबोध	डॉ. बळीराम भुक्तरे	१०५

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Late Ramesh Dist. Parbhani

मुक्तिबोध की कविता में मध्यवर्ग

डॉ. एस.ए.वडचकर

गजानन माधव मुक्तीबोध का जन्म मध्यप्रदेश के ' राजनंदगांव 'में हुआ । अनेक पदोंपर नौकरी करके १९४२ में उज्जैन में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना, १९४५ में बनारस जाकर 'हंस' में संपादक विभाग में कार्य और आकाशवाणी में नौकरी । मुक्तीबोधजी प्रगतिवादी कविता में एक सशक्त सक्षम हस्ताक्षर थे । 'तारसप्तक' के सशक्त हस्ताक्षर के रुप मे पाठकों के समक्ष उभरे । आपका १९६० के बाद के साहित्य पर जबरदस्त प्रभाव रहा है । मुक्तिबोध मार्क्सवाद के दायरे को तोडकर आधुनिक मानव की बेचैनी को व्यक्त करता है । मुक्तिबोध समुचे रचना-प्रक्रिया में सामाजिक व्यक्तित्वका साक्षात्कार किया है,जिसमे मध्यवर्गीय मानसिकता में व्दंन्व्द उत्पन्न कर उच्च शिखरों की यात्रा करने के लिए तथा सब कुछ सहने को मजबुर कर दिया है ।

जीवन की तमाम आपधापी,विडंबनाओ,विसंगतियो,विकृतीयो,और हिसंक बर्बरता के बीच से सहज, सकारात्मक दृष्टि रचना तथ सभ्यता और संस्कृति के उन्नयन,विकास और नवनिर्माण की बुनियाद रखना ही कविता का आपदधर्म है । कविता का धर्म न केवल हिंसा और बर्बरता का विरोध करना है,अपितु सुंदर और शिव को बचाने का भी है । मुक्तिबोध ने आपने काव्य के माध्यम से वर्तमान जीवन को धरती के ठोस, गीले धरातल पर लाने का उपक्रम किया है । आपने मानव-जीवन का यथार्थ आकलन करते-करते उसके निरन्तर संघर्ष और जीवन से आलेक ग्रहण कर युग की जिजीविषा को मूर्तिमान करने का कार्य किया है। वर्तमान समय में मानव जीवन मे व्याप्त भय, आतंक, अनिश्चय, चिन्ता, असन्तोष, तनाव आदि को महसूस करते हुए भी अपने दायित्व को मुक्तिबोध ने नहीं छोडा । वर्तमान जीवन की यांत्रिक सभ्यता से समझौता नही किया । अपितु घुटते हुए मध्यवर्गीय जीवन की छटपटाहट, हीनता एवं व्याकुलता को अत्यन्त निर्ममता से चित्रित किया है । इनका जिवन पुँजीपतियों की नफरत का शिकार था, किन्तु उनका विवेक कहीं पर भी न भटका वे हमेशा समस्यांओ के मकडी जाल को प्यार करते रहे और हमेशा उन्हें आत्मीय बनकर समाज के दूसरे लोगों सेजोडने का प्रयास करते रहे । व्यक्ति चेतना को सामुहिक मानकर वर्तमान जीवन की सीमा और शक्ति दोनों की खरी जाँचपडताल करते रहे ।

मुक्तिबोध का जन्म एवं शिक्षा गुलामी में हुआ और गुलामी की भयानक यातनाओं के देखते एवं जीते हुए गुलाम देश के समाज को शोषित और दु:खी तथा अंग्रेजो को हमदर्द समाज के रुप मे देखते रहे हैं । चाटुकरिता के कारण उनका -हदय उन सब भयानक कष्टो एवं असहय वेदनाओ को महसूस करने मे असमर्थ था । मुक्तिबोध की सहानुभूती मजदूर,किसान एवं निम्न वर्ग के प्रति थी । मुक्तिबोध की कविता व्यापकता,संघर्ष,व्याप्ति एवं विस्तार यह उनकी उदासिनता का कारण नही है । विद्रोह उनकी आदत थी,इसलिए साहित्य मे भाषा भी विद्रोहात्मक रुप प्रचलित हुई । भाषा मौलिक है,उनके

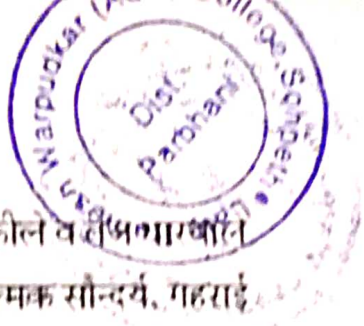

शब्दो मे हाहाकार व हाय-हाय भी है तो कही-कही नुकीली चटटानों जैसे खुरदरे नुकीले व [illegible] शब्द भी है । मुक्तिबोध जीने कविता में मौलिक एवं सार्थक प्रतीको के व्दारा कलात्मक सौन्दर्य, गहराई और सांकेतिकता प्रदान की है । उनके प्रतीक सुनियोजित, सुव्यस्थित एवं सटीक लगते हैं । जैसे मुक्तिबोध की लम्बी कविता 'अन्धेरे में ' आज के मानव संघर्ष की प्रतीक है । इसमें मानव जीवन का कच्च चिठ्ठा है । इतिहास,समाज और अपने आपसे लडी गई लडाईयोंका लेखा जोखा है । देशके आधुनिक जनता का इतिहास के दस्तावेज है ।

"किसी काले देश की धनी काली पटटी ही /आँखो में बाँध दी गई, /किसी खडी पाई की सुली पर मै टाँग दिया गया /किसी शून्य बिन्दु के अंधियारे खडडे मे /गिरा दिया गया मै"-चाँद का मुँह टेढा है "

मुक्तिबोध के प्रतीक जीवन की व्याख्या करते हैं,जीवन को युग की गहराई का सन्दर्भ प्रदान करते है । वह केवल डेकोरेशन नही है, बल्कि जीवन यथार्थ और सत्य को अभिव्यक्ति देते है । मुक्तिबोध जी काव्य को एवं सांस्कृतिक प्रकिया मानते है और काव्य सौंदर्य को जीवन सौंदर्य का पर्याय । साथ ही, वे कविता के अंर्ततत्वो को विकास और आकार देने के पक्ष में भी रहे । कविता मे जिस यथार्थ को वे प्रस्तुत करते हैं ,वह न केवल गतिशील यथार्थ है,वरन परस्पर संतुलित भी है । इसीलिए अपने युगीन यथार्थ के प्रति संपृक्ति और सजगता का निर्वाह करते हुए युग प्रसंगो के संदर्भ में उनकी चिंतन प्रक्रिया ओर दृष्टि में निरंतर संघर्ष जारी रहा । मुक्तिबोध सच्चे अर्थो मे मसीहा थे, क्योंकि भारतीय जनजीवन के उस पक्ष को उन्होंने लिया है, जिसमे वे स्वयं पिसे है । उनके लिए समाज एक वस्तुगत संज्ञा नही है, वरन एक स्पंदित सत्य है, जिसमे निरपेक्ष व्यक्ति का कोई मूल्य नही है । समाज की प्रतिबध्दता के मजबूत जोड से वे निरंतर बँधे रहे । जीवन के जटिल प्रसंगो से दो-चार हुए है। क्षत-विक्षत हुए -ह्दय ने बिजली के झटके खाए है- "कमजोर घुटनों को बार-बार मसल / लड-खडाता हुआ मैं / उठता हूँ दरवाजा खोलने / चेहरे के रक्तहीन विचित्र शून्य को गहरे / पोंछता हूँ हाथ से / अंधेरे के ओर -टटोल टटोलकर बढता हूँ आगे।"

विषम परिस्थिति से भी न टुटने,न रुकने का साहस उन्होने बाहर से नही पाया,आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया से गुजरकर किया है । आत्मा की इस जागृतावस्था में उनका अन्वेषक सक्रिय है । मुक्तिबोध का समस्त चिंतन अनुभवों की कोख से जन्मा है । व्यग्रता, बेचैनी, छटपटाहट चिंताएं उनकी निजी नहीं है, वरन देश, दुनिया,पूरे भूमंडल की वेदना उनके -ह्दय मे समाई हुई है । समय और स्थान के विस्तृत व्यापक फलक पर उनकी भाव-विचार की यात्रा गमन करती हैं । इसी यात्रा के दौरान वेधगम व्यस्था,जीवन व्यापी शून्यता और संप्रस्त जिंदगी को संपूर्ण रुप से देखते, भोगत और जीते और पुरी सच्चाई को अपनी कविता में उदघाटित करते है जो सही अर्थो मे उनके मसीहा होने को परिभाषित करते है । "जल मे कुंभ,कुंभ मे जल है " के समान मुक्तिबोध के -ह्दय के अंदर बाहर वैश्विक चेतना लहर रही है और इसी चेतना में मुक्तिबोध की चेतना विस्तार पा रही है और न मानवीय गरिमा और जीवन मुक्ति की राह खोज पा रही है ।

मुक्तिबोध की कविता में पूरी तौर से विचारधारा को महत्त्व दिया गया है । भारतीय भावना,पाश्चात्य

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth

तार्किकता और मार्क्सवाद का प्रभाव, विश्वप्रेम, सत्यशिव और सुन्दर देखनेवाले भारतीय जीवन को मुक्तिबोध के काव्य में देखा जा सकता है । मुक्तिबोध के जीवन और जीवन दर्शन में विचार और अनुभव का इतना गहरा मिलाप है,यथार्थ और फांतसी का इतना ऊँचा अभिषेक है । भाषा और प्रकार का इतना तादात्म्य है कि हम उनमें तुलसी और निराला के बाद एक दूसरा वह आत्मकथात्मक कवि पाते हैं,जो आत्मविश्लेषण और आत्मभर्त्सना ही करता है, आत्म गौरव कतई नही । उनके जीवन दर्शन के शब्द-शब्द,वाक्य -वाक्य और पद-पद के मार्क्सवाद की पथरीली चमकिली दृष्टि है । इस दृष्टिपथ को छुये बिना मुक्तिबोध की कविता" चन्द्रकान्ता" लग जाती है । इन्होंने यथार्थ को विश्लेषित करने और शोषण आंतक को साक्षात करने के लिए रहस्य और भय की पध्दति को अपनाया है । उसमें अपनी सामाजिक,राजनीतिक समझ आदयन्त बरकरार रखी है । उनके लिए जो-जो मोहभंग हुए है, वे सब "ब्रम्हराक्षस" और "ओरंग उटांग" है। उन्होंने संस्थाओं के भ्रष्टाचार और सत्ताधारी वर्ग के आंतक के खण्डहरों,उल्लुओं,बिल्लिओ और जासुसों के जारिए उभारा है ।

मुक्तिबोध के बारे मे एक और महत्त्वपूर्ण है ।'कामायनी' के तांत्रिक और आदिम प्रतीकों को आनंदलोक के बजाय इस पुंजीवादी तर्क और गुलामी में रखकर दुबारा जाँचा । मुक्तिबोध का परिवेश और परिप्रक्ष्य अंगारे और लपटों की तरह लपलपाता और दिप-दिपता है । कविता को रति लीला के बजाय "प्रदीप्त-लीला" बनाने की कोशिश करते रहे । शब्दों को वे पत्थर,अंगार और लोहे का धर्म देना चाहते रहे । कविता को वे पोस्टर कविता बनाने के महाकाव्यात्मक शिल्प गढते रहे ।उनकी कविताएं एक खुला अखबार है, एक किला है, एक आधुनिक ट्रेजडी है ।

"एक साहित्य की डायरी " यह मुक्तिबोध के यथार्थबोध और जीवन की अनुभुतिवास्तविकताओं का रोजनामा है । नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र मे मुक्तिबोध ने निबंध की रचना-प्रकिया, जीवनदृष्टी, जीवनमूल्य, समाज साहित्य आदि उत्कृष्ट प्रश्नोंपर गंभीरपूर्वक विचार किया है। "काठ का सपना " कहानी संग्रह में समाज व्यवस्था को उजागर करता है ।

मुक्तिबोध आत्मचेता,जनचेता,युगचेता का अदभुत-अपूर्व संश्लेषण है, जो अतीत और वर्तमान में से जीवन सत्वों की सूँघ लेते है,मानव मूल्यो की टोह लेते है । वास्तव मे उनकी चेतना मूल्यान्वेषी है और इस मूल्यान्वेषण में हद और बेहद की सारी सीमाएं विलीन हो जाती है । एक-एक प्रतीक उनकी कविता में पूरी परंपरा व्यवस्था,अव्यवस्था को खोलकर रख देता है । वास्तव में मुक्तिबोध भाषा के शिल्पी होने से अनुभूत वास्तव को जिंदगी के संपूर्ण प्रश्नों और आयामो को, उसकी विभिन्न गतियों एवं धुरिओं को, शब्दों को सामर्थ्य के अनुसार गढते है, काटते-छाटते और तराशते हुए अपनी कविता को चौखट तक ले जाते हैं ।

'प्रत्यंक उर में से तिर आने' की कामना करनेवाले मुक्तिबोध का जनसाधारण से लगाव इतना अधिक है कि वे वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था व्दारा उत्पन्न और पालित-पोषित उच्चवर्ग से अपने आपको दुर कर लेते हैं - "मैं तुम लोगों से इतना दुर हूं / तुम्हारी प्रेरणाओं से मेरी प्रेरणा इतनी भिन्न है / कि जो तुम्हारे लिए विष है, मेरे लिए अन्न है ।"

अन्न जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। बिना अन्न के जीवन की कल्पना सम्भव नही है । मुक्तिबोध सामन्यजन की वेदना, उत्पीडन, घुटन, निराशा को अपने लिए अन्न जैसा मानकर उसे स्वीकारते हैं।

मुक्तिबोध हिन्दी में कालिदासीय जमीनवाले 'राजनीतिक कवि हैं । वे किसी भी सांस्कृतिक कवि ओर शुध्द सौन्दर्यवादी कवि से उन्नीस नही होंगें । मुक्तिबोध के जीवन और जीवनदर्शन में विचार और अनुभव का इतना गहरा मिलाप है । उनके जीवनदर्शन के शब्द-शब्द , वाक्य-वाक्य और पद-पद में मार्क्सवाद की पथरी-चमकीली दृष्टि है । इस दृष्टि पथ को छुए बिना मुक्तिबोध की कविता 'चन्द्रकांता' भी लग सकती है । उन्होने यथार्थ को विश्लेषित करने और शोषण-आतंक को साक्षात करने के लिए रहस्य और भय की पध्दति अपनाई है । उन्होनें संस्थाओं के भ्रष्टाचार ओर सत्ताधारी वर्ग के आतंक को खण्डहरों,उल्लुओ,बिल्लुओ और जासुसों के जरिए उभारा है । मुक्तिबोध ने तथाकथित प्रयोगवादी नई कवियों की तरह कविताएँ नही लिखी । उनकी काव्य-संवेदना अपेक्षाकृत अधिक जागरुक और संयमित है वे अपनी संवेनात्मक प्रतिक्रियाओं को विवेक व्दारा संयोजित करते हैं । आत्म मंथन के तीव्र प्रवाहमें पडकर वे अनेक भाव रत्न निकालाते रहे । उनकी कविता हैं देसे आइने के समान हैं जिनके कवि आत्म-संघर्ष के साथ -साथ युग के समग्र यथार्थ भी प्रतिबिम्बित हुआ है ।

मुक्तिबोध शक्ति एवं प्रवाह के कवि हैं,भाषणात्मक है,गदयात्मक है, शुष्क है। जीवन मे गहन भी है । मार्क्सवादी या व्यक्ति भी है । यानी मुक्तिबोध को सचेतन और सक्रिय व्यक्तियों की तलाश है, जो जीवन के स्वरुप की सही पहचान और अभिव्यक्ति प्रदान कर सके ।

संन्दर्भ-सूची

१. मुक्तिबोध की काव्य सृष्टि
२. भाषा-त्रैमासिक
३. साहित्य-अमृत
४. आधुनिक हिन्दी काव्य

■ ■ ■

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Shaurya Publication
Kapil Nagar, Latur
mob. 8149668999

978-93-83672-47-9
978-93-83672-47-9